पूर्वोत्तर प्रभा
(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)
Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

हिंदी की व्यंग्य प्रधान ग़ज़लें

जियाउर रहमान जाफरी
सहायक प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
मिर्जा गालिब कॉलेज गया, बिहार - 823001
ईमेल: zeaurrahmanjafri786@gmail.com

शोध सारांश: हिंदी ग़ज़ल ने उर्दू के प्रेम काव्य को ठुकरा कर उसे आम लोगों की तकलीफों से जोड़ दिया। दुष्यंत की गजलों का जन्म ही सत्ता के खिलाफ़ बगावत से शुरू हुआ था।अदम गोंडवी से लेकर जहीर की गजलों में भी इसी विरोध का स्वर मिलता है। विरोध का यह रूप कहीं आक्रामकता लिए हुए है, तो कहीं व्यंग्य के माध्यम से उसने अपने भावों का प्रस्फुटीकरण रूप में है, इसलिए हिंदी शायरी में स्वभावतः व्यंग्य की प्रवृत्ति मौजूद रही है। हिंदी के तमाम ग़ज़लकारों के ऐसे शेर इसके उदाहरण हैं।

सूचक शब्द : ग़ज़ल, व्यंग्य, भंगिमा, कटाक्ष, भ्रष्टाचार, लाक्षणिकता, व्यंजना शक्ति, इंतजामिया

मूल-लेख

व्यंग्य साहित्य की वह विधा है जो पाठकों के लिए तो हमेशा रुचिकर रही लेकिन आलोचकों ने इसे स्थापित करने में कभी कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। अक्सर व्यंग्य को हास्य के साथ जोड़ दिया जाता है जबकि हास्य और व्यंग्य दोनों अलग-अलग प्रकार की विधा है। व्यंग्य में गंभीरता भी होती है पर हास्य अक्सर हास्यास्पद बन जाता है।

कविता में व्यंग्य निश्चित तौर पर मौजूद होता है; क्योंकि कविता अपनी बात को प्रस्तुत करने के लिए जिस वक्रता और लाक्षणिकता का सहारा लेती है तथा समाज और व्यवस्था पर जिस प्रकार से प्रहार दिखता है, यह व्यंग्य की ही शैली या विषय रहे हैं। व्यंग्य शब्द का शब्दकोश में अर्थ भी शब्द की व्यंजना शक्ति के द्वारा निकला गूढ़ अर्थ बताया गया है। कविता में ही नहीं मनुष्य के अंदर भी तंज करने या व्यंग्य करने की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। हम कह सकते हैं कि व्यंग्य वह माध्यम है जो बातों को विपरीत रूप में प्रस्तुत करता है। वक्ता के अभिप्राय या आशय को श्रोता अपने आप उसे समझने की चेष्टा करता है। *कहीं पे निगाहें कहीं पे निशाना* यह पंक्ति भी व्यंग्य पर फिट बैठती है। हास्य का उद्देश्य भले मनोरंजन करना हो लेकिन व्यंग्य का उद्देश्य लोगों को जगाना होता है। व्यंग्य में स्पष्टता ने होने पर भी यह हमें प्रभावित करता है। हम जो बातें सहज रूप में नहीं कर सकते व्यंग्य के द्वारा वह बातें आसानी से कह लेते हैं। रीतिकालीन कवि बिहारी व्यंग्य के माध्यम से राजा जयसिंह को पत्नी से अलग होकर राज-काज से जोड़ देते हैं। व्यंग्य लेखक के पास अनुभव की विशाल संपदा होती है। उनके पास शब्दों के तकनीक होते हैं जिनके सहारे वह अपनी बातें प्रभावी रूप से रख पाते हैं।

व्यंग्य के अर्थ पर विचार करें तो इसका एक अर्थ ताना कसना है। कहने का मतलब व्यंग्य के द्वारा सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक या वैयक्तिक विसंगतियों और विडंबना पर प्रहार किया जाता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने व्यंग्य को बड़े अच्छे ढंग से परिभाषित करते हुए कहा है कि व्यंग्य वो है जहां बोलने वाला हँस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला रहा हो। हरिशंकर परसाई जो हिंदी के सबसे बड़े व्यंग्यकार हैं वह व्यंग्य को पाखंडों का पर्दाफाश कह कर पुकारते हैं। अमृत राय के मुताबिक व्यंग्य सीधे कोड़े लगाने का काम करता है।

हिंदी में ग़ज़ल अपने प्रारंभिक काल से ही युग की विसंगतियों पर चोट करती रही है। उर्दू का यह प्रेम काव्य भी हिंदी में अपने इसी तल्ख तेवर को लेकर सामने आया। ग़ज़ल ने अपने तीखेपन से सामाजिक भेदभाव के ऊपर उंगलियां उठाई। हिंदी के शायद ही कोई गज़लकार हों जिन्होंने अपनी ग़ज़ल के किसी शेर में व्यंग्य की शैली न अपनाई हो। कबीर ने जहां दुनियादारी पर व्यंग्य किया, निराला ने जहां पूंजीपति पर व्यंग्य किया तो दुष्यंत इसी के सहारे सत्ता और सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार करते हैं।

हिंदी ग़ज़ल के कई शेर ऐसे हैं जो कुर्सी पर बैठे हुए लोगों की कथनी और करनी के अंतर का जायज़ा लेते हैं, कुछ शेर गौरतलब हैं - भले हो देश में दंगा हमें चिंता नहीं कोई/ जले गोदावरी गंगा हमें चिंता नहीं कोई (अश्वनी कुमार पांडेय)। जहां रहनुमा लूट रहे हैं होगी फिर खुशहाली क्या/ हम महंगाई के मारों को होली क्या दिवाली क्या (अशोक अंजुम)। मुंसिफ़ो काज़ीसभी जल्लाद होकर रह गए/ कायदे कानून सब अपवाद होकर रह गए। (गुलशन मदान)। हर तरफ गोलमाल है साहब/ आपका क्या ख्याल है साहब... (चौबे, 2012)

व्यंग्य की भाषा टेढ़ी भंगिमा लिए होती है,उसमें बातों को उलट-पुलट कर रखने से ही श्रोताओं के बीच आनंद का संचार होता है। देखें कुछ शेर- हो रहे सारे काम वर्दी में/ जो रहे सुबह शाम वर्दी में (हरीश दुबे)। फकत तीरगी है बसेरे में मौला/ नया साल गुजरा अंधेरे में मौला – (रेड्डी, 2010)

ग़ज़ल के कई शेर ऐसे हैं जो सामाजिक गैर बराबरी पर चोट करते हैं। जीवन सिंह ने कहा है- "यह संयोग मात्र नहीं था कि बीसवीं सदी के आठवें दशक के प्रारंभिक दिनों से ही भारतीय समाज में ग़ैर बराबरी, भ्रष्टाचार अन्याय और उत्पीड़न का सिलसिला कायम था।" (सिंह, 2010, पृ. 15) हिंदी ग़ज़ल के कई शायरों ने इस व्यवस्था पर प्रहार किया है जहां इंसानियत को बांटने की कोशिश की गई है। चंद शेर मुलाहिजा हों -

"दाने से मछलियों को लुभाता रहा
क्या हकीकत थी क्या वो दिखाता रहा।" (भावना, 2019, पृ. 66)

"कदम कदम पर छल कपट कदम कदम पे चाले हैं
मगर हमें पता नहीं कमाल है कमाल है।" (सिंह, 2001, पृ. 112)

"वो दुखों को बस नया आकार देते हैं
हम समझते हैं कि हम को प्यार देते हैं।" (मिश्र, 2001, पृ. 17)

"वो क्या जाने वो क्या समझे पागल है दीवाना है
पीर पराई कैसे जाने दर्द से जो अंजाना है।" (प्रजापति, 2022, पृ. 16)

"जो भी वादे किए सब हवा हो गए
चंद नारेमहज आसरा हो गए।" (राही, 2021, पृ. 59)

व्यंग्य समाज में फैले भ्रष्टाचार पर कटाक्ष करता है, पर इसके कहने का तरीका और लहजा ऐसा होता है कि लोग तिलमिला भले ही जाए प्रहार करने का साहस कतई नहीं जुटा पाते। व्यंग्य व्यक्तिवाचक संज्ञा में बात नहीं करता उसे जातिवाचक संज्ञा में बात करना पसंद है। सुनने वाले को यदि पता चल भी जाये कि वक्ता का कथन उसी की तरफ है फिर भी इसकी शैली ऐसी होती है कि वह मजबूर होकर रह जाता है, और कोई प्रतिकार नहीं कर पाता है।

"हिंदी ग़ज़ल की सबसे बड़ी विशेषता है कि हिंदी कविता की तरह यह किसी वाद से जुड़ी हुई नहीं है। ए.एफ नज़र की मानें तो हिंदी ग़ज़ल के कथ्य के दायरे में जीवन के समस्त विषय आते हैं।" (नजर, 2001, पृ. 106) व्यंग्य कभी प्रत्यक्ष तो कभी परोक्ष रूप से प्रहार करने वाली रचना है।

हिंदी के कई ग़ज़ल ऐसे भी हैं जो मुकम्मल तौर पर व्यंग्य प्रधान ग़ज़लें हैं। फजलुर रहमान हाशमी की एक ऐसी ही ग़ज़ल के चंद शेर देखे जा सकते हैं, जिसके हर शेर में शायर इंतजामिया पर सवाल खड़ा करता है-

"यह धर तो देखता हूं सर कहां है
किसी के हाथ में खंजर कहां है
सड़क पर लाश अनजानी पड़ी है
यही सब पूछते हैं धर कहां है
मनु था आदमी इतिहास देखो
बताओ डार्विन बंदर कहां है
यह तो दरखास्त की शोभा है केवल
कहीं व्यवहार में सादर कहां है।" (हाशमी, 2012, पृ. 52)

दुष्यंत हिंदी ग़ज़ल के नुमाइंदा शायर हैं। 'साए में धूप' उनका प्रसिद्ध ग्रंथ है। यह शीर्षक ही अपने नाम में वक्रोक्ति लिए हुए है। जहां धूप भी है और साया भी। एक तरफ गर्म धूप लग रही है तो दूसरी तरफ सायेदार वृक्ष भी मौजूद है। सरदार मुजावर दुष्यंत की शायरी का अध्ययन करते हुए कहते हैं कि- "दुष्यंत कुमार की गजलों का मूल स्वर है व्यंग्य .... समाज और सरकार की गलत व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए दुष्यंत कुमार ने कई शेर प्रस्तुत किए हैं।" (मुजावर, 2003, पृ. 43) वो आगे लिखते हैं कि- "व्यंग्य का सहारा लेकर दुष्यंत कुमार ने समकालीन समाज एवं देश की असंगतियों पर प्रहार किए हैं... दुष्यंत कुमार के शेरों में व्यंग्य की अभिव्यक्ति बड़ी सहजता से हुई है।"(मुजावर, 2003, पृ. 43) वास्तव में दुष्यंत के शेर हमें भीतर तक झकझोरते हैं। दुष्यंत ने जो देखा या समझा था उसे व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है उनके एक- दो शेर इस संदर्भ में देखे जा सकते हैं-

"यह सोच कर के दरख्तों में छांव होती है
यहां बबूल के साए में आ के बैठ गए।
अब नई तहज़ीब के पेशे नजर हम
आदमी को भूनकर खाने लगे हैं।" (कुमार, 1999, पृ. 12)

उनकी शायरी का यही व्यंग्यात्मक लहजा डॉ. उदय नारायण सिंह को पसंद आ जाता है, और वह जोर देकर कहते हैं- "मात्र दो मिसरों में एक साथ कई चुटीली बातें कहने में शेर का कोई सानी नहीं है। इसी बात को दूसरे शब्दों में हिंदी ग़ज़ल के प्रतिनिधि आलोचक और शायर हरेराम समीप कहते हैं- "उनकी ग़ज़लें वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था के नकलीपन का पर्दाफाश करती हैं।" (सिंह, 2010, पृ. 14)

कहना न होगा कि ग़ज़ल ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और ऊंच-नीच की व्यवस्था पर सलीके से चोट किया है। अपने को व्यक्त करने के लिए इसे व्यंग्य वाली शैली सबसे उपयुक्त लगी है। व्यंग्य की तरह ग़ज़ल की भी विशेषता है कि इसमें शब्दों को चुनकर इस्तेमाल किया जाता है, जैसा कि दीक्षित दनकौरी ने भी लिखा है- "ग़ज़ल में शब्दों का किफायत के साथ प्रयोग होता है।" सिंह, 2010, पृ. 14) हिंदी ग़ज़ल के कई शेर इस तकाज़े पर खरे उतरते हैं-

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ग़ज़ल ने व्यंग्य के माध्यम से तत्कालीन व्यवस्था पर प्रश्न खड़े किए हैं। ग़ज़ल ने सामाजिक बदलाव के लिए लोगों को आमादा किया है, और अपनी एक ऐसी भाषा-शैली अपनाई है जिसमें मारक क्षमता तो है ही वो अपने आप में अलग लहजा भी लिए हुए है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सिंह, जीवन. (2010). आलोचना की यात्रा में हिंदी ग़ज़ल. जयपुर : बोधि प्रकाशन.

सिन्हा, अनिरुद्ध. (2001) तुम भी नहीं. नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ.

भावना. (2019). शब्दों की कीमत. गाजियाबाद : अंतिका प्रकाशन.

सिंह, अभिषेक कुमार. (2001) वीथियों के बीच. नई दिल्ली: लिटिल बर्ड प्रकाशन.

मिश्र, विनय. (2001). लोग जिंदा हैं. नई दिल्ली: लिटिल बर्ड प्रकाशन.

प्रजापति, कृष्ण कुमार. (2022). ख्वाहिशों का मेला. नई दिल्ली: अनय प्रकाशन.

राही, बालस्वरूप. (2021). चलो फिर कभी सही. नई दिल्ली: डायमंड पॉकेट बुक्स.

नज़र, ए. एफ. (2001) हिंदी ग़ज़ल के इमकान. राजस्थान: किताबगंज प्रकाशन.

हाशमी. फजलुर रहमान. (2012) मेरी नींद तुम्हारे सपने. नई दिल्ली : दूसरा मत प्रकाशन.

मुजावर, सरदार. (2003). दुष्यंत कुमार की गजलों का समीक्षात्मक अध्ययन. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.

सिंह,नारायण. (2010). हिंदी ग़ज़ल शिल्प एवं कला. बिहार: हिंदी साहित्य सम्मेलन.